“पादप पहचान एवं वर्गीकरण”
(Plant Identification & Taxonomy)
पर
दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, में दिनांक 29 से 30 अगस्त, 2018 को हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों के लिए हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी व पर्यावरण परिषद (HIMCOSTE) द्वारा वितपोषित ‘**पादप पहचान एवं वर्गीकरण”** विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के शिमला, मंडी, रामपुर और नाहन वन मंडलों के 25 वन आरक्षियों ने भाग लिया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की विषय वस्तु **पादप वर्गीकरण (Plant Taxonomy)** एक प्राचीन विधा होने के साथ.साथ अति जटिल एवं गूढ भी है तथा इसमें पारंगता पाने के लिए निरन्तर प्रयास व अभ्यास की आवश्यकता होती है । इस विषय का सैद्धान्तिक व प्रायोगिक ज्ञान वनस्पति विज्ञान के अन्य

शाखाओं जैसे लोक वानस्पतिकी, पौध कायिक विज्ञान तथा वानिकी क्षेत्र के लिए नितान्त जरूरी होता है । विषय वस्तु की इसी महता और वानिकी क्षेत्र में कार्यरत कर्मियों के लिए पौधों की वैज्ञानिक पहचान व वर्गीकरण संबंधी कौशलों को विकसित करने के उद्देश्य से इस दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधारणा तैयार की गई । प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन संस्थान के वैज्ञानिक **डॉ0 वनीत जिष्टू** द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक **डॉ0 वी0 पी0 तिवारी** ने दिनांक 29.08.2018 को किया ।

इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने प्रतिभागियों को कार्यक्रम की उपयोगिता के बारे में अवगत कराया तथा इससे अर्जित ज्ञान को अपने-अपने कार्यक्षेत्र में प्रयोग करने के लिए प्रोत्सहित किया । **डॉ0 तिवारी** ने प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की उपयोगिता को चिन्हित करते हुए कहा कि पादप वर्गीकरण के क्षेत्र में विषय विशेषज्ञों की कमी निरन्तर बनी रहती है तथा इसमें ज्ञानार्जन करना वास्तव में लाभप्रद है ।

संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान **डॉ0 के0एस0 कपूर** द्वारा प्रतिभागियों को पॉवर प्वांईट प्रस्तुतिकरण द्वारा संस्थान के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी उपलब्ध करवाई गई तथा संस्थान द्वारा प्रदेश के विभिन्न भागों में चलाई जा रही शोध परियोजनाओं के बारे में अवगत कराया गया ।

तत्पश्चात प्रतिभागियों को जंगलों में सामान्यतः पाई जाने वाले कवकों (Fungi) के पहचान के बारे में **प्रो0 टी0 एन0 लखनपाल** ने बडे सरल और प्रभावी तरीके से मौलिक एवं कारगर जानकारी प्रदान की । इसी क्रम में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के **प्रो0 एम0 के0 सेठ** द्वारा फर्न (Ferns) प्रजाति के पौधों के बारे में प्रस्तुतिकरण के माध्यम से जानकारी दी गई । इसके बाद संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक **डॉ0 राजेश शर्मा** ने शंकुधारी वृक्षों (Confers) के विविध अभिलक्षणों पर आधारित

पहचान व विविधता पर अपने अनुभव व ज्ञान को सांझा किया । तदुपरान्त **डॉ0 वनीत जिष्टू** ने प्रशिक्षणार्थियों को पादप पहचान**(Plant Identificationi)** के मौलिक सिद्धान्तों संबंधी प्रस्तुतिकरण दिया ।

कार्यक्रम के दूसरे दिन प्रतिभागियों को **डॉ0 पंकज शर्मा** **(HIMCOSTE)** तथा **श्री सुनिल वामन भोंडगे**, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, एचएफआरआई द्वारा पौधों के सैम्पल (Plant Samples) एकत्रित करने की मानक विधियों **(Standard Protocols)** से अवगत करवाने के लिए परसिर के निकट के वन क्षेत्र में भ्रमण पर ले जाया गया तथा वन पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग की प्रयोगशाला में **श्रीमती शिल्पा**, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी द्वारा पौधों को रसायनों द्वारा विषाक्त करने की विधि तथा **श्री दुष्यन्त कुमार**, तकनीकी अधिकारी द्वारा पौधों का वानस्पतिक संग्रहालय **(Herbarium)** तैयार करने के बारे मे व्यवहारिक व क्रियाशील ज्ञान प्रदान किया गया ।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों से हिमाचल प्रदेश वन विभाग के भूतपूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल डॉ0 जी0 एस0 गोराया ने इस विषय पर अपना दीर्घकालिक अनुभव सांझा किया । उन्होंने प्रतिभागियों को बडे ही सरल, रोचक एवं प्रभावी तरीके से इस विषय वस्तु के प्रयोगिक महत्व को समझाया तथा इसे शौक के तौर पर अपनाने और विकसित करने के लिए भी प्रेरित

किया । डॉ0 गोराया ने सहज तरीके से इस विषय वस्तु से संबंधित प्रशिक्षुओं के प्रश्नों एवं शंकाओं का निवारण भी किया ।

कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश विज्ञान, प्रौद्योगिकी व पर्यावरण परिषद (HIMCOSTE) के सदस्य सचिव **श्री कुणाल सत्यार्थी** द्वारा की गई । उन्होंने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि नौजवान वन आरक्षियों के सेवाकाल के शुरूआती दिनों में उनके लिए इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को नियमित रूप से आयोजित किया जाना चाहिए । उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम अग्रिम पंक्ति के वन कर्मियों के लिए सामान्य पौधों की पहचान में सहायक एवं कारगर सिद्ध होगा तथा इसके द्वारा अर्जित ज्ञान व कौशल वर्धन से वे अपने कार्यक्षेत्र के आस पास की पौध संपदा को वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित करने में सक्षम होंगे ।

प्रमाणपत्र वितरण

ग्रुप फोटो

****